# बहादुर कहानी का सारांश/कथावस्तु

## दिलबहादुर से बहादुर बनना

दिलबहादुर १२-१३ साल का पहाड़ी नेपाली लड़का पिता युद्ध में मारे गये माता गुस्सैल स्वभाव की है। और माँ की मार के कारण भागकर एक मध्यम वर्गीय परिवार में नौकरी कर ली, जहाँ गृहस्वामिनी निर्मला बड़ी उदारता से दिलबहादुर से नाम केवल बहादुर कर देती है।

ज्ञानात् मुक्तिः
||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्||

# परिश्रमी एवं हँसमुख बहादुर

बहादुर ईमानदार एवं परिश्रमी लड़का है, वह पूरे घर की साफ-सफाई के साथ-साथ सभी सदस्यों की जरूरतों का भी खयाल रखता है। उसके रहते सभी सदस्य कामचोर, आलसी एवं आरामतलबी हो गये हैं। हँसना और हँसाना उसकी आदत बन गयी है। सोते वक्त रात में अवश्य कोई न कोई गाना गुनगुनाता है।

# किशोर की बदतमीज़ी

शान शौकत एवं रौब से रहने वाला किशोर निर्मला का बड़ा लड़का है। अपने सारे काम बहादुर को सौप रखे हैं। छोटी-छोटी बात पर 'बहादुर को गाली देने से भी नहीं चूकता है। मौका पड़ जाए तो पीट भी देता है। बहादुर पिटाई पाकर भी कोने में ही बड़ी देर खड़ा हो जाता है। एक दिन किशोर ने उसे **'सुअर का बच्चा'** कह दिया जिससे उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची। किशोर का काम करने को मना कर दिया। पूछने पर उत्तर दिया-''बाबूजी भैयाा ने मेरे मरे बाप को क्यों लाकर खड़ा कर दिया?''इतना कहकर वह रो पड़ा।

# निर्मला के रिश्तेदार द्वारा चोरी का आरोप

निर्मला के व्यवहार में भी कुछ परिवर्तन आने लगा था। बहादुर के लिए उसने रोटियाँ सेकनी बन्द कर दी। स्वयं सेंककर खाये। एक दिन निर्मला के घर रिश्तेदार आए। उन्होंने चाय नाश्ते के दौरान ग्यारह रु० चोरी होने की बात कही। सबने बहादुर पर शक किया । लगातार बहादुर के मना करने पर भी उसे डराया, धमकाया, पीटा चूंकि बहादुर पर इल्जाम झूठा था लेखक ने भी उसे एक चाँटा मारा।

# घरवालों का बहादुर के प्रति कटु व्यवहार

इस घटना के बाद बहादुर खिन्न रहने लगा। सभी उसे कुत्ते की तरह दुत्कारने लगे। वह समझ गया कि घर वाले उसके प्रति उदार नहीं है। वह बड़ी बेचैनी और घबराहट महसूस करने लगा।

# बहादुर का घर से भागना

एक दिन उसके हाथ से सिल छूटकर गिर गया। दो टुकड़े हो गए। पिटाई के डर से वह घर से भाग गया। अपना सारा सामान वहीं छोड़ गया। किशोर को अब उसकी ईमानदारी पर विश्वास हो गया था और वे सभी यह भी जानते थे कि रिश्तेदारों ने उसे झूठा इल्जाम लगाया था। अन्त में वे सभी पश्चाताप करने लगे।

# बहादुर कहानी की समीक्षा

## कथावस्तु/सारांश

बहादुर कहानी के लेखक अमरकान्त जी हैं इस कहानी में बहादुर नाम के बेसहारा लड़के की मार्मिक कहानी चित्रित है। कहानी कला के तत्वों के आधार पर बहादुर कहानी की समीक्षा इस प्रकार है-

* ||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ||*

1.शीर्षक–सम्पूर्ण कथा बहादुर पात्र के आस-पास घूमती है। अतः कहानी का शीर्षक 'बहादुर' संक्षिप्त, सार्गर्भित एवं उपयुक्त है।

2.कथानक/कथावस्तु/सारांश–बहादुर कहानी बारह-तेरह वर्ष के पहाड़ी लड़के की दयनीय दशा को प्रकट करती है। बहादुर माँ की मार और उपेक्षा से परेशान होकर शहर की ओर भाग आता है।
और मध्यवर्गीय परिवार से सम्बंधित निर्मला के यहाँ नौकरी करता है। निर्मला लेखक की पत्नी है। बहादुर बड़ी मेहनत और इमानदारी से काम करता है। निर्मला के बेटे किशोर का भी सारा काम करता है।

परन्तु मालकिन उस पर सदा अविश्वास करती हैं। उसे डाटती फटकारती रहती है। किशोर भी उस पर कभी-कभी हाँथ उठा देता है। एक दिन निर्मला उसे रोटी नहीं देती है और स्वंय बनाने को कहती है। इससे बहादुर दुःखी होता है। बार-बार पिटने और धमकाए जाने की वजह से बहादुर से भी त्रुटियाँ हो जाती हैं। एक दिन निर्मला एव के यहा कोई सम्बन्धी आये, जिनके ग्यारह रूपये खो गये। सन्देह में बहादुर को क्रूरता के साथ पीटा गया। बहादुर अपना सभी सामान छोंड़कर भाग गया। तब निर्मला एवं उसके पति को उपनी गलती का अहसास हुआ और पश्चात्ताप भी। यही कहानी का मूल सारांश है।

3.पात्र तथा चरित्र-चित्रण–कहानी में पात्रों की संख्या सीमित है। इसमें केवल चार पात्र प्रमुख हैं-बहादुर, निर्मला, उसका पति और पुत्र किशोर। ये सभी पात्र मध्यम वर्ग के प्रतिनिधि हैं। बहादुर इसका सर्वप्रमुख पात्र है। इसके चरित्र को सहानुभूतिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उसकी मानसिक दशा के परिवर्तन को बड़ी कुशलता से चित्रित किया गया है। वह निम्न दलित वर्ग का प्रतिनिधि है। इस प्रकार लेखक को पात्रों के चरित्र-चित्रण में सफलता मिली है।

ज्ञानात् मुक्तिः
* ||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ||*

4.संवाद-योजना–आलोच्य कहानी के कथोपकथन संक्षिप्त, रोचक तथा गतिशील हैं। संवाद कथानक को आगे बढ़ाते हैं, पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालते हैं।

5. देश-काल और वातावरण–कहानी की रचना देशकाल को ध्यान में रखकर हुई है। अतः इसमें वातावरण का प्रभावशाली रूप दिखाई पड़ता है। सम्पूर्ण घटना निर्मला के घर में घटित होती है।

6.भाषा-शैली–कहानी में सामान्य लोगों की चलती हुई व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया गया है। कहानी की भाषा वक्रता तथा घुमाव-फिराव से सर्वथा दूर सरल तथा स्वाभविक है। इसमें उर्दू के प्रचलित शब्दों (बरदाश्त, शराफत, तमीज, शायद, अफसोस आदि), दुहरे शब्दों (सिल-बट्टा, रूपया-पैसा, रोबदाब, नौकर-चाकर आदि) महावरों (चारपाई तोड़ना आदि) तथा क्रोधपरक शब्दों (फ्लर्ट, मुक्की आदि) का यथास्थान प्रयोग करके उपयुक्त वातावरण की सृष्टि की गयी है।

* ||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ||*

## 7.उद्देश्य–

बहादुर कहानी के लेखक सुप्रसिद्ध कथाकार अमरकान्त हैं। इनकी कहानियों में मध्यम वर्ग तथा निम्न वर्ग की पारिवारिक परिस्थितियों का सजीव, आदर्श तथा यथार्थवादी चित्रण मिलता है। इनकी 'बहादुर' कहानी मध्यमवर्गीय परिवार में नौकरी करने वाले बहादुर नाम के पहाड़ी लड़के पर आधारित एक रोचक, सुगठित, संक्षिप्त तथा समस्यामूलक कहानी है।

इस कहानी में बताया गया है कि मात्र पूँजीपति ही श्रम का शोषण नहीं करते, वरन् सामान्य मध्यम-वर्ग भी इस कुकृत्य में पीछे नहीं है।

इस कहानी का उद्देश्य समाज में उत्पन्न वर्ग-संघर्ष को मानवीय सहानुभूति द्वारा समाप्त करने का सन्देश देना है।
शोषितों के प्रति मानवता एंव प्रेम का व्यवहार, ऊँच-नीच के भेद के कारण दिलों में पड़ी दरार को भर देता है। बहादुर भी मानवीय स्नेह एवं संवेदनाओं का भूखा है। मालिक द्वारा पीटे जाने और प्रतिक्रिया स्वरूप उसके द्वारा घर छोड़ दिये जाने पर परिवार के सभी लोगों को पश्चात्ताप का अनुभव होता है। वे स्वयं को दोषी महसूस करते हैं। धनी और निर्धन का वर्ग-भेद मानवीय भावनाएँ ही कम कर सकती

* ||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ||*

हैं। लेखक का मुख्य उद्देश्य दोनों के हृदयों का परिवर्तन है और सबके प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार बनाये रखने का सन्देश देना है।

# कहानी की समीक्षा

## हेडिंग्स

↓

१. कथानक / कथावस्तु
२. पात्र एवं चरित्रचित्रण
३. कथोपकथन या संवाद
४. देशकाल एवं वातावरण
५. भाषा शैली
६. उद्देश्य
७. शीर्षक

# बहादुर का चरित्र-चित्रण

↓

## हेडिंग्स

१. छल-कपट रहित भोला बालक
२. परिश्रामी
३. हँसमुख एवं मृदुभाषी
४. ईमानदार हृदय
५. सहनशील एवं स्वाभिमानी
६. मातृ-पितृ भक्त बालक
७. व्यवहार कुशल
८. स्नेही बालक

अमरकान्त द्वारा लिखित कहानी 'बहादुर' में मुख्य रूप से चार पात्र हैं-लेखक या निर्मला का पति, निर्मला, पुत्र किशोर तथा पहाड़ी नौकर दिलबहादुर, जिसे निर्मला ने केवल बहादुर नाम दे दिया था और यही बहादुर कहानी का नायक है। बहादुर के चरित्र की अनेक विशेषताएँ हैं, जिन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर देखा जा सकता है-

## छल-कपट रहित भोला बालक:

१२-१३ वर्ष का नेपाली बालक बहादुर बहुत ही भोला है और छल-कपट से कोसों दूर है। उसमें न तो किसी प्रकार की कृत्रिमता या बनावटीपन है और

न ही किसी बात को छिपाने की कला। वह किसी भी बात का बिलकुल सच एवं स्पष्ट उत्तर देता है।

## परिश्रमी:

बहादुर अत्यन्त परिश्रमी लड़का है। वह घर के सभी सदस्यों के अधिकांश कार्यों को करता है और उन्हें करते हुए न कोई आलस्य दिखाता है और न कोई अनमनापन। वह बड़े ही प्यार एवं ज़िम्मेदारी के साथ अपने कार्यों को सम्पन्न करता है।

## हँसमुख एवं मृदुभाषीः

बहादुर हर समय हँसते रहने वाला लड़का है। वह किसी भी बात को कहकर अपनी नैसर्गिक, स्वाभाविक हँसी ज़रूर हँसता है, जो सामने देखने-सुनने वालों के हृदय को झंकृत कर देती है। वह सभी लोगों के प्रश्नों का उत्तर बड़े ही मीठे स्वर में हँसकर देता है।

## ईमानदार एवं सच्चा हृदयः

गरीब होने के बावजूद भी बहादुर अत्यधिक ईमानदार बालक है, जिसे बेईमानी छू तक नहीं पाई है। उसके मन में कोई लालच नहीं है। घर में

कहीं गिरे या पड़े पैसों को वह निर्मला के हाथों में रख देता है। वह घर छोड़कर जाते समय भी अपना सामान तक नहीं ले जाता है।

## सहनशील एवं स्वाभिमानी:

बहादुर बड़ा ही सहनशील बालक है। वह घर के सारे काम करने के बावजूद निर्मला की डाँट खाता रहता है। किशोर द्वारा भी कई बार बदतमीज़ियाँ की जाती हैं, जिन्हें वह थोड़ी देर में ही भूल जाता है और अपने काम में पूर्ववत् लग जाता है। एक बार किशोर द्वारा उसके पिता से

सम्बन्धित गाली देने पर उसका स्वाभिमान जाग जाता है। वह किशोर का काम करने से इनकार कर देता है।

## मातृ-पितृभक्त बालकः

बहादुर का हृदय मातृभक्ति एवं पितृभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। माँ द्वारा पीटे जाने के कारण घर से भागा बहादुर माँ के पास जाना नहीं चाहता, लेकिन माता-पिता के प्रति अपने फर्ज को वह अच्छी तरह समझता है। इसीलिए वह अपने कमाए पैसों को माँ को ही देना चाहता है। अपने

||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्||

पिता के प्रति प्रेम ने ही उसे किशोर का काम करने से मना करने हेतु प्रेरित किया।

## व्यवहार कुशलः

बहादुर बहुत व्यवहार कुशल बालक है। इसी व्यवहार कुशलता के कारण वह घर के सभी सदस्यों को अत्यधिक प्रभावित कर देता है। मोहल्ले के बच्चों को भी वह अपने गाने सुनाकर मोहित कर लेता है।

## स्नेही बालकः

वह निर्मला के अन्दर अपनी माँ की छवि देखता है। वह स्नेह का भूखा है। जब निर्मला उसका ध्यान रखती है, तो वह भी बीमार निर्मला का बहुत ध्यान रखता है। उसे निर्मला के स्वास्थ्य की बहुत चिन्ता है।

इस प्रकार, बहादुर पाठकों के हृदय-पटल पर अपना अमिट चित्र अंकित कर देता है। पाठक उसे लम्बे समय तक याद रखते हैं।

ज्ञानात् मुक्तिः
||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्||